अध्यक्ष का सम्बोधन

माननीय मुख्यमंत्री जी, माननीय उप मुख्यमंत्री जी, श्री प्रेम कुमार जी, श्री सदानन्द जी, श्री जीतन राम मांझी जी, श्री राजू तिवारी जी, श्री ललन पासवान जी, विभिन्न दलों के विधायक दल के अन्य नेतागण और सभी माननीय सदस्यगण ।

आज सही माने में यह मेरे लिये सौभाग्य की बात है कि आज पूरे सदन ने अपना विश्वास दिया है और एक उच्च संसदीय परम्परा का निर्वाह करते हुये सर्वसम्मति से आप सबों ने मुझे इस पद पर आसीन किया है । मैं किन शब्दों में आप सबों का या इस सदन का शुक्रिया अदा करूं, शब्द नहीं मिल रहे हैं, जिस ढंग से जितनी बड़ी जिम्मेवारी और जितना बड़ा विश्वास आप सभी माननीय सदस्यों ने, सभी दलों ने एक मत होकर विश्वास जताया है । वास्तव में यह मेरे लिए सौभाग्य के साथ-साथ एक चुनौती भी है और जैसा कि माननीय मुख्यमंत्री जी ने और आप सभी माननीय सदस्यों ने अपनी भावनाओं में व्यक्त किया है कि आज एक दल के सदस्य होने के नाते या फिर सरकार में काम करने के बाद जब इस आसन पर मैं आया हूँ और आप सबों ने जो बताया है कि इसकी भूमिका एक अलग प्रकार की होती है और उस अलग प्रकार की भूमिका निभाने के लिए भी जो आप सबों ने अपना-अपना समर्थन देने की घोषणा की है, मेरे लिए इस गुरूत्तर जिम्मेवारी को निभाने के लिए सबसे बड़ा संबल वही होगा जो आप सबों ने इस उच्च संसदीय परम्परा का निर्वाह करने के लिए आप सबों ने अपना-अपना सहयोग और समर्थन देने की घोषणा की है । आपके इतने बड़े विश्वास को मैं निभा पाऊं, आगे भी आपसे इसी तरह के सहयोग की अपेक्षा रहेगी और शुक्रिया जैसा कि मैंने कहा कि इतनी बड़ी जिम्मेवारी, इतना बड़ा विश्वास, मैं धन्यवाद भी दूं, शुक्रिया भी अदा करूं तो खोजने से भी शब्द नहीं मिलते, भाव विह्वलता है, पूरा शब्द कोष खोजने के बाद भी पूरा शब्द कोष सूना जान पड़ता है । लुगत खाली दिखता है । लेकिन फिर भी आप सबों ने जो विश्वास दिया है भाव विह्वलता है और भाव विह्वलता ही शब्द शून्यता का कारण बन रही है । किन शब्दों में आप सबों का शुक्रिया अदा करूँ? आप सबों ने इस पद पर बैठाया है और साथ-साथ सब लोगों ने एक मत से हमें अपनी जिम्मेवारी का भी अहसास कराया है । मुझे खुशी है और मेरा भी मानना है कि आप सबों ने जब यह पद दिया है इस पद के साथ जुड़ा दायित्व भी है । इस प्रतिष्ठा के साथ-साथ परीक्षा भी है, आपने जो सम्मान दिया है उसके साथ चुनौती भी हैं, ये सब मुझे महसूस हो रहा है लेकिन इन सब के बावजूद मुझे पूरा यकीन है कि आपलोगों ने जिस ढंग से चाहे सत्ता पक्ष ने या प्रतिपक्ष ने या सभी माननीय सदस्य ने जिस सहयोग का भरोसा दिलाया है, हम संसदीय परम्पराओं को आगे अच्छे से अच्छे ढंग से निर्वाह कर पायेंगे ऐसा मेरा मानना है ।

माननीय सदस्यगण, अभी मेरे बारे में माननीय मुख्यमंत्री जी ने और सभी जिन लोगों ने भी अपने उद्‌गार रखे हैं, सब लोगों ने अनेक प्रशंसा और तारीफ के शब्द और विशेषण कहते गये । सच पूछते हैं तो जब इस तरह की बातें हो रही थी मैं तो सहमता जा रहा था मुझे

विस्मय हो रहा था कि आखिर आप इतने गुणों को, विशेषणों को मुझमें देख रहे हैं और जब मैं अपनी तरफ देखता था मुझे लगता था कि इतने सारे गुण तो किसी मनुष्य में शायद ही एक साथ हो सकते हैं । और अगर मुझमें लोग इतने सारे गुण देख रहे हैं, इतने विशेषण जोड़े जा रहे हैं तो मैं तो अंदर से उलझन में फंसता जा रहा था कि ऐसा तो हो ही नहीं सकता है लेकिन अचानक मुझे एक पुरानी बात याद आ गयी जिसने मेरे सारे उलझनों को दूर किया कि जब कोई देखता है किसी में अच्छाई तो एक पुरानी कही हुई बात से कि 'ब्यूटी लाईज इन द आईज ऑफ द होल्डर', सुन्दरता हो या अच्छाई हो वह तो देखने वालों की आंखों में बसती है अगर आपको मुझमें अच्छाई दीखती है तो सच पूछते हैं वह अच्छाई मुझमें है ऐसी बात नहीं है वह आपको देखने की कला है । वह आपके नजरों की अच्छाई है कि जो दूसरों में अच्छी चीजों को देखते हैं इसलिए मैं इसी भाव से उन विशेषणों को और आपके द्वारा प्रदर्शित उन प्रशंसा को मैं लेता हूँ । सच पूछते हैं तो वैसी कोई बात नहीं है, यह आपकी दृष्टि की उदारता एवं सदाशयता है या फिर आपकी नजरों की दरियादिली है, फराखदिली है जो इतने सारे गुण वह हममें देखते हैं और मैंने इसको दूसरे रूप में लिया है कि ये ऐसे गुण आप मुझमें देखना चाहते हैं इसको मैंने इस रूप में लिया है कि आपने मेरे लिए एक लक्ष्य निर्धारित कर दिया है । एक मेरे लिए मापदंड दे दिया है कि अध्यक्ष में इतने सारे गुणों का समावेश होना चाहिए जो आपने देखने की कोशिश की है इसलिए मैंने आपके सारे इन बातों को अपने लक्ष्य के रूप में लिया है और मेरी पूरी कोशिश होगी मैं पूरी ईमानदारी से कोशिश करूँगा कि आपने जिस अपेक्षा और आकांक्षा के साथ मुझे इस पद पर आसीन किया है मैं उसके अनुरूप अपना आचरण, व्यवहार करूं । जैसा कि आपने कहा है और मुझे भी एहसास है कि थोड़े ही देर पहले तक मैं एक दल का सदस्य था मैं एक विधायक दल का सदस्य था अब आप सबों के विश्वास ने मुझे उससे ऊपर उठा दिया है और स्वाभाविक रूप से मैं कोशिश करूंगा कि दलीय भावना से ऊपर उठकर जो इस सदन के हित में होगा आप सदस्यों के हित में होगा, वही काम इस आसन से किया जाय ऐसी मेरी पूरी कोशिश होगी ।

आप सब जानते हैं कि हमलोग खुशनसीब है इस सदन के सदस्य होने के नाते, पूरा बिहार जानता है कि अनेक लोग कोशिश करते हैं इस सदन में पहुंचने के लिए, बहुत सारे राजनीतिक सामाजिक कार्यकर्त्ता जीवन पर्यन्त कोशिश करके भी इस सदन में नहीं पहुंच पाते हैं लेकिन हमें, हमको, आपको जनता ने ये मौका दिया है यहाँ पहुंचने का, इस मायने में हम खुशनसीब है । यहाँ जिस सदन के आप सदस्य हैं जिस सदन में बैठे हैं, यहां के कण-कण में इतिहास छुपा है, यहां के जर्रे जर्रे में तारीखी इबारत लिखी हुई हैं, आप पढ़ सकते हैं, देख सकते हैं, आप खोज सकते हैं और एक सदस्य होने के नाते ये हमारा आपका कर्त्तव्य भी बनता है कि आप हम जिस इस पावन सभा के सदस्य हैं उसका जो इतिहास है इसमें जो तारीख लिखी गयी है जो इतिहास यहां से बना है अवश्य हम उसको जाने और उसी के अनुरूप बनने की और काम करने की चेष्टा करें । आप सब जानते हैं कि यह सदन बिहार की सम्पूर्ण जनता की आकांक्षा और आशा का प्रतीक है । बिहार का इतिहास गौरवपूर्ण रहा ही है

और आज जनतंत्र और गणतंत्र में काम कर रहे हैं जो हमारा लक्ष्य और आदर्श है जिसको हमने अपनाया है उसकी रोशनी भी बिहार से ही मिलती है और हमलोग बिहार विधान-सभा के सदस्य है, यह हम सब लोगों के लिए गौरव की बात है ।

जब मुझे इस पद के लिए इस पद पर आने की सूचना हमलोगों के नेता और पार्टी के तरफ से मिली तो मैं यह भी सोच रहा था कि इसे कहते तो अध्यक्ष हैं लेकिन स्पीकर, स्पीकर का तो मतलब होता है बोलने वाला वक्ता और काम तो इस आसन पर सुनने का होता है जो माननीय सदस्य बोलते हैं या सरकार बोलती है, विपक्ष बोलता है तो काम तो सुनने का है फिर इसका स्पीकर तो मुझे जानकारी मिली कि ये सदन तो एक लम्बे समझिये ऐतिहासिक संघर्ष के बाद जनतंत्र का यह रूप बना है जिसमें हम आप काम कर रहे हैं जो हमारे इस संसदीय जनतंत्र की जननी है जो ब्रिटिश पार्लियामेंट उसका जब विकास हो रहा था तो शुरू के जमाने में 12वीं 13वीं शताब्दी में उस समय ये सदन आपस में तो विमर्श करता ही था । यह पेटिशनिंग बॉडी भी हुआ करता था, यहाँ पर जनता आवेदन भी दिया करती थी उस समय 12वीं, 13वीं शताब्दी में और उसपर सदन विमर्श करके वहाँ के राजा को इसकी इत्तला देता था, सूचना दिया करता था । हालाँकि उस समय अध्यक्ष या स्पीकर मनोनीत हुआ करते थे और वह पूरा विमर्श के बाद, वाद-विवाद के बाद जो सदन फैसला करता था, उसकी सूचना देना उस स्पीकर का काम था राजा को, तो वह जो भी, उस समय इसको प्रोल्योक्यूटर भी शुरू में कहते थे और जब वह सदन की भावना सदन के फैसले को राजा को बताने जाता था और सदन के बिहाफ में वह राजा को बताता था, यह वहीं से उसके स्पीकर बनने की कार्रवाई या बनने के नामाकरण का सिलसिला शुरू हो गया कि वह तो बोलने वाला, स्पीकर का तो मतलब होता है बोलने वाला, वह सदन के बिहाफ में राजा को बोलता था ।

उस समय से इस स्पीकर की कहानी शुरू हो गई और स्पीकर की कहानी और सदन के स्पीकर को उस समय से कहा जाता है कि स्पीकर इस सदन का सेवक होता है, अध्यक्ष इस सदन का सेवक होता है । यह ऊँची कुर्सी भले दिखती है लेकिन जो संसदीय प्रणाली कहती है कि यह आसन सदन का सेवक होता है । पुरानी कहावत है कि Speaker is the servant of the House, हालाँकि यह भी जोड़ा है कि not of the Crown, राजा का भी नहीं, राज का भी नहीं not of the Government, सरकार का भी नहीं है not of any political party किसी पार्टी का भी नहीं है, सिर्फ और सिर्फ इस सदन का सेवक है यह अध्यक्ष या स्पीकर । इसलिये हमारा काम तो सदन और आप सदस्यों की सेवा करना है और इसके बारे में एक बहुत पुराना, हालाँकि जिस समय जो सम्प्रभुता के लिये या अधिकारों का संघर्ष चल रहा था 17वीं शताब्दी में, जो ब्रिटिश पार्लियामेंटरी सिस्टम में चार्ल्स-I राजा हुआ करते थे और Lenthal (लेंथल) स्पीकर हुआ करते थे उस समय जो अंतिम अधिकार राजा का रहेगा या पार्लियामेंट का रहेगा, इसमें जो लंबा संघर्ष चला था, इंगलिश सिविल वार्स हुये थे उसमें, उसमें एक बहुत ही मशहूर वाकया है जो इस सदन की गरिमा या सदन के अधिकार को बताता है कि जब राजा की इच्छा को वहाँ के सदन ने मानने से इन्कार कर दिया तो राजा

ने सदन के पाँच सदस्यों को देशद्रोह के आरोप में गिरफ्तार करने का आदेश दे दिया लेकिन उसको कोई गिरफ्तार नहीं कर पाया । तो अंत में राजा 500 सैनिकों के साथ पार्लियामेंट पहुँच गया उन पाँच सदस्यों को गिरफ्तार करने के लिये और उसने कहा जो स्पीकर, उस समय के लेन्सल साहब थे, उसको कहा कि आप इन पाँचों को मेरे हवाले करिये, मैं गिरफ्तार करके ले जा रहा हूँ । लेकिन स्पीकर ने जो उनको कहा है, वह एकदम समझिये कि इतिहास का पन्ना है और एक इतिहास की बात है, उदाहरण है । स्पीकर ने राजा को सीधे कह दिया कि आप आये हैं लेकिन अभी मैं आँख रहते हुये आपको देख नहीं रहा हूँ, मेरी जिह्वा है लेकिन मैं आपकी बातों का जवाब नहीं दे सकता हूँ, अगर मेरे सामने कुछ है तो सिर्फ यह सदन है और मुझे जो सदन कहेगा वही मैं करूँगा, जिसका मैं सेवक हूँ और उसने राजा की बातों को मानने से भी इनकार कर दिया । तो यह सदन की महत्ता है और जैसा कि हमने कहा कि हम सभी गौरवान्वित हैं इस सभा के सदस्य होने के नाते ।

जैसा कि माननीय मुख्यमंत्री जी और सभी लोगों ने कहा है, मुझे भी आज से लगभग वही तीन - साढ़े तीन दशक पहले इस लोकतंत्र के मन्दिर में प्रवेश का अवसर मिला था और तब से लगातार चाहे मैं इस सदन के अन्दर रहा या बाहर रहा, इस सदन की कार्यवाहियों को हमने पूरी गम्भीरता से, नजदीक से देखा और समझा है । जैसा कि मैंने कहा कि सत्ता-पक्ष का भी मैं सदस्य रहा, विपक्ष का भी सदस्य रहा और मैं अनुगृहीत हूँ माननीय मुख्यमंत्री जी का जिन्होंने मुझे सरकार में भी काम करने का अवसर दिया, इसलिये मुझे सत्ता-पक्ष के सदस्य के रूप में भी काम करने का अनुभव है, विपक्ष के सदस्य के रूप में भी काम करने का अनुभव है और माननीय मुख्यमंत्री जी ने मुझे जो अवसर दिया, तो सरकार में रहकर भी काम करने का अवसर मिला है और जो हमने काम देखा है, मैं पूरी ईमानदारी से कह सकता हूँ कि काम करने की भूमिका भले ही अलग-अलग हो लेकिन अगर सही मायने में देखा जाय तो लक्ष्य एक ही होता है चाहे सत्ता-पक्ष की बात हो या विपक्ष की बात हो, लक्ष्य एक ही होता है - जनहित । बिहार की जनता जिसकी आकांक्षाओं और आशाओं के प्रतीक के रूप में हम यहाँ पर उपस्थित हैं, यही हम सबों के लिये लक्ष्य होता है और इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये हमलोग यहाँ पर मौजूद हैं ।

जैसा कि माननीय सदानन्द बाबू ने कहा कि इस आसन से भी ऊपर लिखी हुई कुछ बातें-चीजें हैं जिनकी ओर इन्होंने इशारा किया है, आप लोगों ने मुझे इस ऊंचे आसन पर बैठाया है लेकिन मैं जब देखता हूँ तो हमसे भी ऊपर है, इस ऊँचे आसन से भी ऊपर एक चीज लिखी हुई है और वह है - धर्म चक्र प्रवर्तनाय । हमसे भी ऊपर आप देखियेगा तो पायेंगे कि लिखी हुई चीजें हैं - धर्म चक्र प्रवर्तनाय । आप लोग सभी समझते हैं कि धर्म चक्र में ही सब कुछ है, उसमें सच्चाई, ईमानदारी, दयानतदारी, जिसकी भी बात सोचें, वह सब उसी में मौजूद है और यह हमलोगों को सम्राट अशोक का दिया हुआ है और इसी धर्म चक्र का हमलोगों के राष्ट्र ध्वज में भी स्थान है । यह इस सदन के इस ऊँचे आसन के ऊपर लिखी हुई है, हम सबों को कोशिश यह करनी है कि यह धर्म चक्र घूमता रहे - धर्म चक्र प्रवर्तनाय ।

मतलब समाज में और राजनीति में दयानतदारी, ईमानदारी और सच्चाई की जगह बनी रहे, यह हम सबों की कोशिश होनी चाहिये, यह हमारा, आपका, सबका लक्ष्य होना चाहिये ।

मैं आज के इस मौके पर कुछ और अधिक नहीं कहना चाहता हूँ, आप सभी ने अपेक्षा जाहिर की है, मैं आपकी अपेक्षाओं के अनुरूप काम करने की कोशिश करूँगा और जब हम इस धर्म चक्र की बात करते हैं तो आप सभी माननीय सदस्यों को विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियमावली जो है, उसकी प्रति आपको दी गई होगी, जिन माननीय सदस्य को नहीं मिली है वह अवश्य प्राप्त कर लें और मैं कोशिश करूँगा कि सभी माननीय सदस्यों को सँविधान की भी एक प्रति उपलब्ध करा दी जाय । आप जान लीजिये कि यह सदन, आपकी अपेक्षाएँ अपनी जगह पर हैं लेकिन सदन चलता है नियम, प्रक्रिया और परम्परा से । आपकी अपेक्षाएँ अगर मुझसे कुछ और हैं, आसन से आपकी अपेक्षाएँ कुछ और हैं लेकिन अगर वह दोनों धर्म ग्रन्थ, इस सभा के लिये वह दोनों पुस्तकें - सँविधान तथा विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियमावली, इस सदन के लिये वही दोनों धर्म ग्रन्थ हैं, क्योंकि आपकी अपेक्षाएँ आसन से कुछ और हैं लेकिन अगर वह दोनों धर्म ग्रन्थ - सँविधान या विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियमावली की अपेक्षा आसन से कुछ और है तो वही आसन की विवशता हो सकती है वरना यह आसन आपका दिया हुआ है । यह आसन, जैसा कि हमने कहा कि संसदीय प्रणाली में यह आसन आप सभी माननीय सदस्यों का और इस सदन का सेवक होता है, उस हैसियत से मैं आप सबों की अपेक्षा के अनुरूप काम करने की कोशिश करूँगा । विशेष रूप से जो 98 बिल्कुल हमारे नये माननीय सदस्य चुनकर आये हैं, उप मुख्यमंत्री जी ने भी कहा है, मैं चाहूँगा कि वे लोग कम से कम जो सँविधान की प्रासंगिक धाराएँ हैं विधान सभा के कार्य संचालन के संबंध में या फिर विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियमावली को एक बार निश्चित रूप से शुरू से अंत तक पढ़ लें तभी आपको विधान सभा की कार्यवाही में भाग लेने का भी अच्छा सा अवसर मिलेगा और विशेष रूप से नये माननीय सदस्यों से अनुरोध करूँगा कि निश्चित रूप से वे दोनों पुस्तकों को ग्रहण कर लें, प्राप्त कर लें और गंभीरता से अवश्य देख लें ।

अन्त में हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर हमें इतनी ताकत दे, हमें इतनी क्षमता दे, हमें इतनी सामर्थ्य दे कि हम आप सबों की इच्छा के अनुरूप काम कर सकूँ । सबसे बड़ी बात जो सदन की अपेक्षायें हैं, मैं बिना किसी भेदभाव के, बिना किसी पक्षपात के, बिना किसी कशिश के, बिना किसी तास्सुब के, आप लोगों की सेवा कर सकूँ ताकि इस प्रजातंत्र के मंदिर में, इसके आदर्श को, इसकी कार्यशैली को और ऊँचा बढ़ा सकूँ और इसके माध्यम से जम्हूरियत के इस मुकद्दस मजलिस की खिदमत कर सकूँ । मैं इसी भावना के साथ, इसी संकल्प के साथ आप सबों को धन्यवाद देते हुए इस आसन को ग्रहण करता हूँ ।